Class - 12 | Teacher's name : Partha Sarkar
Subject : Music | Date - 12.09.2021

5. तालाध्याय

5. तालाध्याय :- ताल शब्द की व्युत्पति और लक्षण, पांच प्रकार के मार्गताल, मात्रा, मार्ग, कला, लघु, गुरु, लुप्त, चचत्पुट, चाचपुट, षटपितापुत्रक, पात और कला, 14 प्रकार के गीतकों का लक्षण, देशी ताल का लक्षण, उनका उद्देश्य, 120 देशी तालों के नाम तथा रूप और विस्तार का वर्णन है।

6. वाद्याध्याय

6. वाद्याध्याय :- इसमें तत, अवनध , शुषिर, और घनवाद्यों का वर्गीकरण है। वीणा वादन की तकनीक, वंशी व उसके भेद जैसे मुरली, काहल, सुरंगा, शंख, आदि तथा अवनध वाद्यों में पाट, सोलट, हस्तपाट, मर्दल तथा घनवाद्यों में घंटा आदि का वर्णन मिलता है।

7. नर्तन अध्याय

7. नर्तन अध्याय :- इसमें अंग, प्रत्यंग, 108 करण, अंगहार, रेचक, चारी, देशी, मार्गी, मंडल, देशी लास्य अंग, अभ्यास के लिए निर्देश दिए गए हैं।

अंत में **पांच परिशिष्ट** हैं।

पहले परिशिष्ट में भाषा, विभाषा, आदि रागों के नाम हैं।

दूसरे परिष्ठ में परिशिष्ट में सप्त स्वरों का विस्तार है।

तीसरे परिशिष्ट में 22 श्रुतियों पर शुद्ध तथा विकृत स्वरों की स्थापना की गई है।

चौथे परिशिष्ट में श्रुतियों के आधार पर सड़ज, मध्यम व गंधार ग्राम के अनुसार स्वरों की स्थिति को बताया है।

पांचवें परिशिष्ट में संगीत के ग्रंथकारों के नाम है इस प्रकार यह ग्रंथ पूरे 1,000 पृष्ठों में संस्कृत के अनुष्टुप छंद में रचा गया है।

****